पाठ - 17

कबीर और उनके गुरु रामानन्द

कबिरा हरि के रूठते, गुरु के सरने जाय,
कह कबीर गुरु रूठते, हरि नहिं होत सहाय।
-कबीर

हिन्दू, मुसलमान, ब्राह्मण, धनी, निर्धन सबका वही एक प्रभु है। सभी की बनावट में एक जैसी हवा, खून, पानी का प्रयोग हुआ है। भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, नींद सभी की जरूरतें एक जैसी हैं। सूरज, प्रकाष और गर्मीसभी को देता है, वर्षा का पानी सभी के लिए है, हवा सभी के लिए है। सभी एक ही आसमान के नीचे रहते हैं। इस तरह जब सभी को बनाने वाला ईष्वर, किसी के साथ भेद-भाव नहीं करता तो फिर मनुष्य-मनुष्य के बीच ऊँच-नीच, धनी-निर्धन, छुआ-छूत का भेद-भाव क्यों है ? ऐसे ही कुछ प्रष्न कबीर के मन में उठते थे जिनके आधार पर उन्होंने मानव मात्र को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। कबीर ने अपने उपदेषांे के द्वारा समाज में फैली बुराइयों का कड़ा विरोध किया और आदर्ष समाज की स्थापना पर बल दिया।

माना जाता है कि उनका जन्म 1398 ई0 में काषी में हुआ था। कबीर का पालन-पोषण नीरू और नीमा नामक दम्पत्ति ने किया था। इनका विवाह लोई नाम की कन्या से हुआ जिससे एक पुत्र कमाल तथा पुत्री कमाली का जन्म हुआ। कबीर ने अपने पैतष्क व्यवसाय

(कपड़ा बुनने का काम) में हाथ बँटाना शुरू किया। धार्मिक प्रवष्त्तियों के कारण कबीर रामानन्द के षिष्य बन गए।

कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे इसलिए उनका ज्ञान पुस्तकीय या शास्त्रीय नहीं था। अपने जीवन में उन्होंने जो अनुभव किया, जो साधना से पाया, वही उनका अपना ज्ञान था। जो भी ज्ञानी, विद्वान उनके सम्पर्क में आते उनसे वे कहा करते थे-

'तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखों की देखी।

सैकड़ों पोथियाँ (पुस्तकें) पढ़ने के बजाय वे प्रेम का ढाई अक्षर पढ़कर स्वयं को धन्य समझते थे।

कबीर को बाह्य आडम्बर, दिखावा और पाखण्ड से चिढ़ थी। मौलवियों और पण्डितों के कर्मकाण्ड उनको पसन्द नहीं थे। मस्जिदों में नमाज़ पढ़ना, मंदिरों में माला जपना, तिलक लगाना, मूर्तिपूजा करना, रोजा या उपवास रखना आदि को कबीर आडम्बर समझते थे। कबीर सादगी से रहना, सादा भोजन करना, पसन्द करते थे। बनावट उन्हें अच्छी नहीं लगती थी। अपने आस-पास के समाज को वे आडम्बरों से मुक्त बनाना चाहते थे।

साधु-संतों के साथ कबीर इधर-उधर घूमने जाते रहते थे। इसलिए उनकी भाषा में अनेक स्थानों की बोलियों के शब्द आ गए हैं। कबीर अपने विचारों और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए स्थानीय भाषा के शब्दों का प्रयोग करते थे। कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी' भी कहा जाता है।

कबीर अपनी स्थानीय भाषा में लोगों को समझाते, उपदेष देते थे । जगह-जगह पर उदाहरण देकर अपनी बातों को लोगों के अन्तर्मन तक पहुँचाने का प्रयास करते थे। कबीर की वाणी को साखी, सबद और रमैनी तीन रूपों में लिखा गया जो 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है। कबीर ग्रंथावली में भी उनकी रचनाएँ संग्रहीत हैं।

कबीर की दष्ष्टि में गुरु का स्थान भगवान से भी बढ़कर है। एक स्थान पर उन्होंने गुरु को कुम्हार बताया है, जो मिट्टी के बर्तन के समान अपने षिष्य को ठोंक-पीटकर सुघड़ पात्र में बदल देता है।

सज्जनों, साधु-संतों की संगति उन्हें अच्छी लगती थी। यद्यपि कबीर की निन्दा करने वाले लोगों की संख्या कम नहीं थी लेकिन कबीर निन्दा करने वाले लोगों को अपना हितैषी समझते थे-

' निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।

उस समय लोगों के बीच में ऐसी धारणा फैली हुई थी कि मगहर में मरने से नरक मिलता है। इसलिए कबीर अपनी मष्त्यु निकट जानकर काषी से मगहर चले गये और समाज में फैली हुई इस धारणा को तोड़ा। 1518 ई0 में उनका निधन हो गया।

कबीर सत्य बोलने वाले निर्भीक व्यक्ति थे। वे कटु सत्य भी कहने में नहीं हिचकते थे। उनकी वाणी आज के भेद-भाव भरे समाज में मानवीय एकता का रास्ता दिखाने में सक्षम

है।

संत रामानन्द

रामानन्द का जन्म 1299 ई0 में प्रयाग में हुआ था। इनकी माता का नाम सुषीला और पिता का नाम पुण्य दमन था। इनके माता-पिता धार्मिक विचारों और संस्कारों के थे। इसलिए रामानन्द के विचारों पर भी माता-पिता के संस्कारों का प्रभाव पड़ा। बचपन से ही वे पूजा-पाठ में रुचि लेने लगे थे। रामानन्द कबीर के गुरु थे।

रामानन्द की प्रारम्भिक षिक्षा प्रयाग में हुई। रामानन्द प्रखर बुद्धि के बालक थे। अतः धर्मषास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन्हें काषी भेजा गया। वहीं दक्षिण भारत से आये गुरु राघवानन्द से उनकी भेंट हुई।

राघवानन्द वैष्णव सम्प्रदाय में विष्वास रखते थे। उस समय वैष्णव सम्प्रदाय में अनेक रूढ़ियाँ थीं। लोगों में जाति-पाँति का भेद-भाव था। पूजा-उपासना में कर्मकाण्ड का जोर हो चला था। रामानन्द को यह सब अच्छा नहीं लगता था।

गुरु से षिक्षा-दीक्षा प्राप्त करके रामानन्द देष भ्रमण को निकल गए और उन्होंने समाज में फैली जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदि की विषमता को जाना और उसे तोड़ने का मन बना लिया। देष-भ्रमण के बाद जब रामानन्द आश्रम में वापस आये तो गुरु राघवानन्द ने उनसे कहा कि ''तुमने दूसरी जाति के लोगों के साथ भोजन किया है। इसलिए तुम हमारे आश्रम में नहीं रह सकते।'' रामानन्द को गुरु के इस व्यवहार से आघात पहुँचा और उन्होंने अपने गुरु का आश्रम त्याग दिया।

रामानन्द के मन में समाज में फैली, ऊँच-नीच, छुआ-छूत, जाति-पाँति की भावना को दूर करने का दष्ढ़ संकल्प था। उनका विचार था कि यदि समाज में इस तरह की भावनाएँ रहीं तो सामाजिक विकास नहीं हो सकता। उन्होंने एक नये मार्ग और नये दर्षन की शुरुआत की, जिसे भक्ति मार्ग की संज्ञा दी गई। उन्होंने इस मार्ग को अधिक उदार और समतामूलक बनाया, और भक्ति के द्वार धनी, निर्धन, नारी-पुरुष, अछूत-ब्राह्मण सबके लिए खोल दिए। धीरे-धीरे भक्ति मार्ग का प्रचार-प्रसार इतना बढ़ गया कि डॉ0 ग्रियर्सन ने इसे बौद्ध-धर्म के आन्दोलन से बढ़कर बताया। रामानन्द के बारह प्रमुख षिष्य थे। जिनमें अनन्तानन्द, कबीर, पीपा, भावानन्द, रविदास, नरहरि, पद्मावती, धन्ना, सुरसुर आदि शामिल हैं।

रामानन्द संस्कृत के विद्वान थे और संस्कृत में उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की किन्तु उन्होंने अपने उपदेष व विचारों को जनभाषा हिन्दी में प्रचारित-प्रसारित कराया। उनका मानना था कि हिन्दी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जिसके माध्यम से सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

रामानन्द के विचार एवं उपदेषों ने दो धार्मिक मतों को जन्म दिया। पहला रूढ़िवादी दूसरा प्रगतिवादी। रूढ़िवादी विचारधारा के लोगों ने प्राचीन परम्पराओं व विचारों में विष्वास करके अपने सिद्धान्तों व संस्कारों में परिवर्तन नहीं किया। प्रगतिवादी विचारधारा वाले लोगों ने स्वतंत्र रूप से ऐसे सिद्धान्त अपनाये जो सभी को मान्य थे। इस परिवर्तन से समाज के सभी वर्गों को समान अधिकार मिलने लगा।

रामानन्द महान संत थे, उनकी वाणी में जादू था। भक्ति में सराबोर रामानन्द ने ईष्वर भक्ति को सभी दुःखों का निदान एवं सुखमय जीवन-यापन का सबसे अच्छा मार्ग बताया है। लगभग 112 वर्ष की आयु में 1412 ई0 में रामानन्द का निधन हो गया। संत रामानन्द 'राम' के अनन्य भक्त और भक्ति आन्दोलन के 'जनक' के रूप में सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रष्नों के उत्तर लिखिए-

1. कबीर वाह्य आडम्बर किसे कहते थे ?
2. कबीर ने अपने उपदेषों में किन बातांे पर बल दिया ?

3.सही कथन के सामने सही (√) तथा गलत कथन के सामने गलत (x) का निषान लगाइए।

1. कबीर की षिक्षा-दीक्षा काषी में हुई।
2. निन्दा करने वाले लोगों को कबीर अपना हितैषी समझते थे ।
3. कबीर की वाणी को साखी, सबद, रमैनी तीन रूपों में लिखा गया है।
4. रामानन्द ने संस्कृत में अनेक ग्रन्थों की रचना की।

4.सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कबीर की दष्टि में गुरु का स्थान -
क. माता-पिता के समान है।
ख. भगवान के समान है।
ग. भगवान से बढ़कर है।

योग्यता विस्तार

गुरु की महिमा तथा बाह्य आडम्बर के विषय में कहे गए कबीर के दोहों में से एक-एक दोहे को याद कीजिए।